

प्रेस्टन वक्र

[स्रोत: द द्रिष्टि](#)

प्रेस्टन वक्र किसी देश में [जीवन प्रत्याशा](#) और [प्रतिव्यक्ति आय](#) के बीच [अनुभवजन्य संबंध \(empirical relationship\)](#) को संदर्भित करता है, जिसे 1975 में [अमेरिकी समाजशास्त्री सैमुअल एच. प्रेस्टन](#) द्वारा प्रस्तावित किया गया था।

- वक्र से स्पष्ट है कि [अमीर देशों के लोगों का जीवन काल](#) आमतौर पर [गरीब देशों के लोगों की तुलना में लंबा होता है](#), जो संभवतः स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पोषण आदिक बेहतर पहुँच के कारण होता है।
- जब किसी गरीब देश की प्रतिव्यक्ति आय बढ़ती है, तो उसकी जीवन प्रत्याशा में शुरुआत में काफी वृद्धि होती है।
 - उदाहरण के लिये, [भारत की प्रतिव्यक्ति आय](#) 1947 में 9,000 से बढ़कर 2011 में 55,000 रुपए हो गई, जबकि जीवन प्रत्याशा 32 से बढ़कर 66 वर्ष हो गई।
- हालाँकि, प्रतिव्यक्ति आय और जीवन प्रत्याशा के बीच सकारात्मक संबंध एक निश्चित बिंदु के बाद समाप्त होने लगता है, क्योंकि [क्योंकि जीवनकाल को अनिश्चित काल तक नहीं बढ़ाया जा सकता है](#)।
- [प्रेस्टन वक्र \(Preston Curve\)](#) द्वारा दर्शाया गया सकारात्मक संबंध [अन्य विकास संकेतकों](#) जैसे [शिक्षा/मातृ मृत्यु दर](#), शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल आदि पर भी लागू किया जा सकता है।

और पढ़ें: [लोरेनज़ वक्र और गिनी गुणांक](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/preston-curve>